बकरी पालन एक उन्नत एवं लाभकारी व्यवसाय

डा0 राजेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
शल्य चिकित्सा विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
पटना, भारत

डा0 विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक
औषधि विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
पटना, भारत

प्रस्तावना

प्रदेश में बकरी पालन व्यवसाय की असीम सम्भावना है। भूमिहीन, लघु व सीमान्त कृषकों के लिए बकरी पालन एक अच्छा एवं लाभकारी रोजगार है। जिन स्थानों पर दूध देने वाले बड़े पशुओं का अधिक स्थान घेरने, अधिक पूँजी लगाने और अधिक चारे-दाने का इन्तजाम न होने के कारण पालना कठिन है वहीं बकरियों को सफलता पूर्वक पाला जा सकता है। बकरियें ऐसे अनेक खाद्य पदार्थों को चाव से खा लेती हैं जो आमतौर पर व्यर्थ समझे जाते हैं। इन्हीं सब

कारणों से बकरी को गरीबों की गाय कहा जाता है। एक अच्छी नस्ल की स्वस्थ बकरी को यदि अच्छी तरह से रखा जय तो वह प्रत्येक दिन 2.5 लीटर दूध 7-10 महीने तक एक व्यॉत में दे सकती है। बकरी के दूध में रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता अन्य दूध की अपेक्षा अधिक होता है। विषाणु की संख्या बकरी के ताजा दूध में अपेक्षाकृत बहुत कम होता है। 12 मिनरल मूल रूप् से अलग-अलग दूध में पाये जाते हैं उसमें से बकरी के दूध में सबसे ज्यादा 9, गाय के दूध में 6 और भैंस के दूध में 5 पाया जाता है। बकरी का दूध व दही बच्चों के लिए दस्त अवरोधी का काम करता है। अच्छे गुणों वाला दूध देने के साथ-साथ बकरियों से अच्छा मांस भी मिलता है। मरने के बाद इनकी खाल अच्छे दामों पर बिक जाती है।

बकरी पालन से लाभ

बकरी को गरीब की गाया कहा जाता है इससे साबित होता है कि बकरियों से बहुत लाभ हैं जो निम्नलिखित हैं-

1. इनका मांस व दूध इस वर्ग के लिए महत्वपूर्ण पशु प्रोटीन óोत है।
2. पारिवारिक श्रम का प्रभावी उपयोग होता जिससे रोजगार के नये अवसर मिलते हैं।
3. खेती में इनका मल-मूत्र प्रयोग करने से उर्वरता बढ़ती है।
4. फसल अवषेषों का समुचित प्रयोग हो जाता है।
5. इसका स्वामित्व ग्रामीण गतिविधियों को तर्क संगत व संगठित करता है।

6. सीमान्त व भूमिहीन पालाको के लिए बकरियों का स्वामित्व मनोरंजन का भी एक साधन है।

राष्ट्रीय मांस, दूध, खाल उत्पादन में योगदान

भारतीय अर्थव्यवस्था में बकरियों का महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा उत्पादित मांस, दूध, खाल, रेषा, खाद व अन्य उप उत्पादों का योगदान व उसका परिमाण अभी भी मूल्यांकित नहीं है। मांस दूध और खालों से प्राप्त आय की गणना उनके वर्तमान उत्पादन स्तर तथा तदनुरूप् लागत के आधार पर की गयी है जबकि बालों व मांसावषिष्ट का उत्पादन क्रमषः खालों तथा वधित बकरियों की संख्या के आधार पर आंकलित किया है। मेंगनी व मूत्र का मूल्य यूरिया में नाइट्रोजन की मात्रा के आधार पर निर्धारित है। यह एक विचारणीय है कि बकरी उत्पादन पूर्णतया ऐसे आहार पर आधारित है जिसका न तो विपणन हो सकता है और न ही किसी अन्य के प्रयोग में आ सकता है।

बकरी पालन की वर्तमान समस्यायें

अन्य पशुओं की तरह ही बकरी उत्पादन को भी सामान्यतः प्रजनन, पोषण, स्वास्थ्य, प्रबन्ध और विपणन के विभिन्न पहलू प्रभावित करते हैं, अतः इनके इनके उन्नयन हेतु यह आवष्यक है कि इन सभी क्षेत्रों से जुड़ी समस्यायों का ेनिराकरण किया जाये। इसके अतिरिक्त बकरियों के उत्पादन स्तर सुधार व विकास कार्यक्रमों के सफल कार्यान्वयन से कई सामाजिक, आर्थिक व प्र्यावरणीय समस्यायें भी जुड़ी हुई है।

बकरी पालन को प्रोत्साहित करने के लिए जंगल व चारागाह

की व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि बकरियों का आहार ó ोत झाड़ियां, पेड.-पौधे और घास है। बकरी की प्रचलित उत्पादन प्रणाली मात्र जीवन निर्वाह के लिए है इसलिए आवष्यक है कि वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा नवीनतम तकनीकि, प्रषिक्षण और आर्थिक सहायता प्रदान की जाये। साथ ही बकरियों के प्रजनन व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं पर भी विषेष ध्यान दिया जाये जिससे बकरी पालन सफल हो सके।

बकरयों की प्रमुख नस्लें

बकरियों की विभिन्न नस्ले हैं जो अलग-अलग जलवायु के लिए उपयुक्त हैं-

नस्ल	पाये जाने वाले स्थान
सिरोही	राजस्थान और गुजरात।
मारवाड़ी	राजस्थान और गुजरात।
बरबरी	आन्ध्र प्रदेश और गुजरात।
बीटल	पंजाब और राजस्थान।
जमुनापारी	उत्तर प्रदेश।
जलवाड़ी	गुजरात।
गोहिलवाड़ी	गुजरात।
भलाबारी	केरल।
गद्दी, चम्बा	हिमांचल एवं उत्तरांचल।
चेंगु	हिमांचल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश।
पष्मीना	लद्दाख।
बंगाली	पष्चिम बंगाल, पूर्वी राज्य।

गंगम उड़ीसा।

उपयोगिता के आधार पर बकरी के नस्लों का वर्गीकरण।

दुधारू नस्लें- बरबरी, सूरती, सिरोही, मेहसाना

द्विकाजी नस्लें- जमुनापरी, बीटल, मारवाड़ी मालाबरी, आस्मानाबादी, जलालाबादी, सिरली

मांस वाली नस्लें- काली बंगाल, गद्धी, गंजम, कच्छी

रेशे वाली नस्लें- पष्मीना, चेंगू, चोकला

नस्ल	मूल स्थान	मुख्य विषेषताएं	उत्पादन	अन्य
जमूनापारी	इटावा में चकर नगर व बाटपुरा, चम्बल व यमुना का कछार	बड़ा आकार, कान 25 से 30 सेमी0 लम्बे, पिछली टांगों पर घने लम्बे बाल, नाक उभरी हुई, रंग मुख्यताः सफेद, शरीर पर काले भूरे रंग के धब्बे, सींग छोटे व चपटे, ड्रेसिंग प्रतिषत 48 प्रतिषत, हड्डी मांग रेषों, 1:39 लम्बे थन	दूध 201.6 किग्रा0, बड़ा आयन, लम्बे थन, वसा 3.5 से 5 प्रतिषत	दुग्ध काल 194 दिन
बरबरी	टाटा, आगरा, मथुरा, अलीगढ़	छोटा कद, छोटे कान, सीधी नाक, सींग छोटे, सीधे रंग ज्यादातर सफेद, भूरा व सफेद रंग, छोटे पैर, शरीर पर छोटे बाल, शरीर का पिछला हिस्सा भारी, आयन पूर्णता विकसित, घर में रखकर पालने हेतु उपयुक्त, डेªसिंग प्रतिषत 50	96 किग्रा0	दुग्ध काल 152 दिन
बीटल	गुरदासपुर, अमृतसर, फिरोजपुर	पैर पर लम्बे बाल, सींग पीछे की ओर मुड़े हुए घुमावदार ि◌काजी	173	दुग्ध काल 182 दिन

गद्दी/चम्बा	चमबा कांगड़ा, कुल्लू, सिरमूर, किनौर तथा षिमता घाटी	मध्यम आकार सफेद रंग, कान मध्यम नीचे की ओर लटके हुए, सींग ऊपर और पीछे की ओर मुड़े हुए, पूरा शरीर लम्बे बालों से ढका हुआ, कुछ लाल रंग के भी, बालों की लम्बाई 18 से 25 सेमी0, प्रथम ब्यात पर आयु 19 माह	बलों का उत्पादन 0.7 से 1.0 किग्रा0 वर्ष भर में प्रति बकरी	मंस और भार वाहन के लिये पालते हैं।
चेगू	पर्वतीय जिले उत्तर काषी, चमोली, पिथौरागढ़, यकषर	मध्यम आकार, रंग सामान्यतया सफेदी लिये भूरा लाल, सींग ऊपर की उठे घुमावदार	पष्मीना उत्पादन प्रति वर्ष प्रति बकरी 100 से 110 ग्राम	रेशा व मांस के लिए पालते हैं।
चियांग तांग	सफेद रंग, लेकिन कुछ काले भूरे व घूसर रंग, सींग अर्द्ध वृत्ता	लद्दाख के चानं तागं क्षेत्र, हिमाचल में लाहुल एवं स्थित घाटियाकार लम्बः बाहर की ओर, कान लम्बे लटके हुए, चेहरा बालों से ढका रहता है।	पष्मीना उत्पादन प्रति वर्ष प्रति बकरी 155 से 214 ग्राम	
सिरोही	राजस्थान में सिरोही जिला	गठिला आकर, मध्यम ऊचाई, रंग भूरा, गले के नीचे मांसल भाग, कान चपटे मध्यम नीचे की ओर झुके हुए, सींग छोटी घुमावदार ऊपर की ओर मुड़ी	114 किग्रा0 दूध, 194 दिनों के दुग्धकाल में	छुध व मांस के लिए द्विकाजी

मरवाड़ी	राजस्थान में जालौर, बीकानेर, बाड़मेर जेसलमेर	मध्यम आकार, शरीर लम्बे बालों से ढका, काला रंग, चपटे कान, सींग छोटे नुकीले पीछे की ओर मुड़े हुए	197 दिनों के दुग्धकाल में 101 किग्रा0 दूध	बहुकाजीय नस्ल, दूध मांस व बालों के लिये
जखराना	राजस्थान के अलवर जिले में बहरोर तहसील	आकार में बड़ी, काला रंग, मुह व कानों पर सफेद रंग के धब्बे, सिर सकरा उठा हुआ, कान मध्यम आकार के चपटे	115 दिनों के दग्धकाल में 121 किग्राव दूध	
मेहसाना	गुजरात में मेहसाना जिला, गांधी नगर अहमदाबाद	मध्यम आकार, काला रंग, कान की जड़ के पास सफेद धब्बे, कान सफेद पत्ती की तरह गिरे हुए, सींग हल्के पीछे की ओर मुड़े हुए	मुख्यतः पांस उत्पादन नस्ल	
जालाबादी	गुजरात में सुरेन्द्र नगर राजकोट	मध्यम आकार, लम्बे रूछ बाल कान लम्बे पत्ती के समान, लटके हुए सींग, लम्बे मुड़े हुए	मुख्यतः मांस उत्पादक हैं।	
कच्छी/काठिया वादी	कच्छ, उत्तरी गुजरात	मध्यम आकार, रंग काला शरीर पर सफेद धब्बे, नर मादा दोनों में सींग उपस्थिति, मोटे नुकीले सींग उपर की ओर झुके हुए	195 दिनों के दुग्धकाल में 125 किग्रा0 दूध	दुग्ध उत्पादन हेतु
सूरती	गुजरात के सूरत बड़ौदा जिला	मध्यम आकार, रंग सफेद, आयन विकसित, थन शंकुवाकार, कान मध्यम आकार, सींग छोटे पीछे की	1 से 2 किग्रा0 दूध प्रतिदिन	दुधारू नस्ल

		ओर मुड़े हुए		
बिरारी	महाराष्ट्र में नागपुर, म0प्र0 में बरघा, निम	ऊँचा कद, रंग काला	0.6 किग्रा0 दूध प्रतिदिन	मंस हेतु
सागॅम नेरी	महाराष्ट्र के पूना व अहमद नगर	मध्यम आकार, रंग काला, सफेद व भूरा, कान मध्यम नीचे की ओर झुके, सींगो का झुकाव ऊपर तथा पीछे की ओर, मांस एवं मोहेयर दोनो के लिये उपयुक्त	168 दिनों के दुग्धकाल में 83 किग्रा0 दूध	मेहेयर उत्पाद प्रतिवर्ष 2 किग्रा0 प्रति बकरी
टोसमा नाबादी उसमानाबादी	उस्मानाबाद जिला महाराष्ट्र में	कद में ऊँची रंग काला, सफेद भूरे धब्बे, कान मध्यम आकार के	मुख्यतः मांस उत्पादक नस्ल	--
कनाई अडू	तमिलनाडु के रामानाथपुरम व त्रिनेलबेल्ली	ऊँचा रंग काला, व सफेद धब्बे, कान मध्यम आकार, नर सींग दार तथा मादा सींग रहित	मुख्यतः मांस उत्पादक नस्ल	--
माला बारी	केरल में काली कट, कनोर, मालपुरम	मध्यम आकार काला व सफेद रंग नरों में दाढ़ी होती है सींग छोटे व पीछे की ओर मुड़े हुए, कान मध्यम आकार व ऊपर उठे हुए	मुख्यतः मांस उत्पादक नस्ल ..	--
गं्ाजम	उड़ीसा के	कद ऊचा, रंग काला, भूरा धब्बेदार,	मुख्यतः मांस उत्पादक नस्ल.	--

	गंजम व कीरापुट में	कान मध्यम आकार, सींग लम्बे व ऊपर की ओर उठे हुए		
बंगाल	पष्चिम बंगाल आसाम	रंग काला या भूरा, छोटा कद, नर मादा में दोनों में दाढ़ी, सींग ऊपर की ओर उठे कान छोटे व चपटे	अच्छे गुणवत्ता वाली मांस उत्पादक जनन क्षमता अच्छी होती है।	जनन क्षमता अच्छी होती है।

जमुना पारी

यह बकरियों की सबसे बड़ी नस्ल है इसके नाक उभरे हुए सींग छोटे तथा चौड़े होते हैं कान लम्बे तथा लटके हुए रहते हैं। जमुना पारी बकरी वर्ष में एक व्याँत तथा एक बार मंे अक्सर एक ही बच्चा देती है। इनका आकार बड़ा होने के कारण इनके बच्चे को वयस्क होने में लगभग एक वर्ष का समय लग जाता है। वयस्क नर का वजन 70-90 तथा मादा का वजन 50-60 कि0ग्रा0 होता है। मादा बकरी प्रायः एक वर्ष में गाभिन हो जाती है, जून-जुलाई में गाभिन बकरियां अक्टूबर-नवम्बर तक बच्चा दे देती हैं और गर्मी के महीने में लगातार 1-2 लीटर प्रतिदिन दूध देती रहती है।

बीटल

इसका शरीर भूरे या काले रंग पर सफेद धब्बा होता है और यह देखने में बिल्कुल जमुनापारी की तरह होती है किन्तु ऊँचाई तथा शरीर भार में जमुनापारी से छोटी होती है। इसके सींग बाहर तथा पीछे की ओर घूमा रहता है। इसके वयस्क नर का वजन 55-65 तथा मादा का 45-55 कि0ग्रा0 होता है। यह भी वर्ष में एक व्याँत तथा एक बार मंे 60 प्रतिषत बकरियाँ एक ही बच्चा देती है साथ ही 1-2 लीटर प्रतिदिन दूध देती है। यह सभी जलवायु के लिए उपयुक्त नस्ल है।

बरबरी

इस नस्ल की बकरियां 13-14 माह के समय में दो बार बच्चे देती हैं और एक व्याँत मंे दो बच्चे देती है। इन बकरियों का आकार छोटा होने के कारण इनके बच्चे वयस्क होने में कम समय लगता है।

वयस्क नर का वजन 35-40 तथा मादा का वजन 25-30 कि0ग्रा0 होता है। अक्टूबर की जन्मी बकरी मई में गाभिन होकर सितम्बर से पहले बच्चे दे देती है। यह मांस और दूध के लिए उत्तम नस्ल है इसे बांधकर गाय की तरह खिलाया जा सकता है। यह प्रतिदिन 1 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है।

ब्लैक बंगाल

इस नस्ल की बकरियों से अच्छे प्रकार का मांस मिलता है और इसकी खाले ंबहुत उपयोगी होती है। इसके शरीर पर काला, भूरा तथा सफेद रंग का छोटा रोंआ पाया जाता है। यह छोटे कद की होती है वयस्क बकरे का वजन 15-20 कि0ग्रा0 और बकरी का वजन औसतन 10-15 कि0ग्रा0 तक होता है। इसकी प्रजनन क्षमता बहुत अच्छी है यह 2 वर्ष में 3 बार बच्चा देती है एवं एक ब्यांत मे ं 2-3 बच्चे को जन्म देती है कुछ बकरियाँ एक वर्ष मंे 2 बार बच्चे को जन्म देती है तथा एक बार में 4-4 बच्चे देती है। इसकी मेमना 15-16 माह की उम्र में पहला बच्चा देती है। किन्तु इस नस्ल की बकरियॉ एक ब्यॉत में मात्र 14-18 लीटर दूध देती है जो बच्चों के लिए अपर्याप्त होता है।

उपर्युक्त वर्णित बकरियों के प्रभेद एवं समुचित प्रबंधन से बकरी व्यवसाय को अपनाकर किसान भाई अधिक से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।